Volume-2, Issue-11, November-2015 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

Available online at: www.rhimrj.com

स्वामी विवेकानंदा एवं आधुनिक प्रबंधकीय नियोजन

Dr. Rakhi Chauhan[1st]
Assistant Professor,
School of Business,
ITM University,
Gwalior, Madhya Pradesh (India)

Prof. Umesh Holani[2nd]
Professor,
Institute of Commerce & Management,
Jiwaji University,
Gwalior, Madhya Pradesh (India)

स्वामी विवेकानन्द ने अपनी दूसरों को समझने और जागरूक करने की विशाल क्षमता के माध्यम से ''ज्ञान'' अथवा ''आत्म जागरूकता'' तथा इसे साकार रूप प्रदान करने में आने वाली आपदाओं को विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण एवं वर्णन किया और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यवहारिक तरीकों को सुझाव दिया।

मानव विकास के विभिन्न पहलुओं से संबंधित उनकी सोच का विश्लेषण करना तथा वर्णन करना और समकालीन प्रबंधकीय गतिविधियों में उनके योगदान का अध्ययन करना ही इस शोध का लक्ष्य है। मूलतः यह अध्ययन प्रकृति के आधार पर विवरणात्मक है।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जो भी आधुनिक प्रबंधकीय धारणाएं हैं उनका उपयोग वर्षों पूर्व ही स्वामी विवेकानंदा द्वारा किया गया था तथा उनमे एक कुशल प्रबंधक के सभी गुण विद्यमान थे ।

प्राक्कथन

स्वामी विवेकानन्द द्वारा सुस्पष्ट दृष्टि एवं सूक्ष्म विश्लेषण से हमारे विद्यग्रान्तिपूर्ण बुद्वि को झगझोंड़ते हुए आधुनिक प्रबंधन पाठ्यक्रम का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं योग्य हिस्सा बनने हेतु आधुनिक प्रबंधन अवधारणाओं जैसे दूरदृष्टता, नेतृत्व, प्रेरणा, उत्कृष्टता, लक्ष्यों को प्राप्त करने की जिज्ञासा, निर्णय करना, योजना बनाना, कार्य के प्रति व्यवहार के अर्थ, व्यक्तियों की प्रकृति, आदि का विवेचन तथा अभ्यास समय–समय पर किया गया।

जबकि पश्चिमी प्रबंधन रूपरेखा समस्याओं का निराकरण ऊपरी तौर पर अगाढ़, भौतिक एवं परिधीय स्तर पर ही करता है स्वामी विवेकानन्द हर विषय (मुद्दा) समस्या का समाधान मानवीय सोच की गहराई से करते थे क्योकि उनका मानना था कि एक बार आदमी की मूल सोच का सुधार होगा तो स्वतः ही उनके कार्यो और उनके परिणामों की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी होगी।

साहित्य की समीक्षा

नवीन माथुर द्वारा प्रबंधन के कार्यक्षेत्र मे चाणक्य (इस दुनिया में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रसिद्व तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य) का अध्ययन किया गया है और उनके बारे में कहा गया है':– वह न केवल एक महान राजनेता, अर्थशास्त्री, दार्शनिक और कानून–दाता थे अपितु वे प्रबंधन के विशेषज्ञ भी थे। वे हर युग के लिए एक गुरू है। उनकी प्रसिद्व रचना 'अर्थशास्त्र' प्रबंधन के कुछ अवधारणाओं और सिद्वान्तों को साकार रूप प्रदान करती है, हालांकि इनकी चर्चा आधुनिक प्रबंधन की भाषा में नही की गई है। 'अर्थशास्त्र' भारतीय प्रबंधकों के लिए अत्यंत उपयोगी ज्ञान और बुद्वि की धरोहर है।

डॉ. एन.एम. खण्डेलवाल का मत है – वे एक ओर भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता और दूसरी ओरशिक्षाविद् होते हुए प्रशासन के अभ्यासी का अनूठा मिश्रण थे।

इसी प्रकार, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर भी न केवल नवीन माथुर द्वारा अपितु आनन्द कुरियन, अस्दिम चौधरी, सी.के. प्रहलाद, गीता पिरामल आदि द्वारा अध्ययन किया गया है।

नीवन माथुर कहते है – जहॉ महात्मा गांधी ने हर विषय और जीवन के हर पहलू पर चर्चा की है लेखन किया है, न्यासधारिता, श्रमिकों के कल्याण समय–प्रबंधन एवं नेतृत्व जैसे विषयों पर उनके विचारों की ओर प्रबंधकों, उद्यमियों, प्रबंधन के शिक्षको एव छात्रों का ध्यान देना उनके लिए उपयोगी है।

रौल सिन्हा ने ''महात्मा गांधी – एक प्रबंधक'' विषय पर प्रस्तुति देते हुए कहाः– ''वह एक असाधारण प्रबंधक थे, उनमें सही काम के लिए सही व्यक्ति को ढूँढने की अदभुद कला थी ।''

अरूण मेरा (सीईओ, बोस्टन परामर्श समूह) कहते हैः— गांधी जी की नेत्त्व शैली को अगर निगम प्रशासन ;बवतचवतंजमद्ध भारत में प्रयोग किया जाए तो संगठन में सबसे निम्न पद पर कार्यरत व्यक्ति भी संगठन में विश्वास करेगा एवं संगठन के प्रति उसके योगदान के महत्व को भी समझेगा।

विमला पाटिल ''आदि शंकराचार्य का आधुनिक प्रबंधन मे योगदान'' विषय पर लेखन—कार्य करते हुए लिखती है— आधुनिक युवा भारतीयों को यह जानकारी होनी चाहिए कि आदि शंकराचार्य न सिर्फ एक महान दृष्टा एवं दार्शनिक थे अपितु वे एक महान प्रबंधन गुरू एवं पर्यावरणविद भी थे, जिनके उपदेश समय की कसौटी पर खड़े है।

श्रीमद् भगवदगीता, एक धार्मिक ग्रंथ, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण के बहुमूल्य शब्द संग्रहित है, वास्तविकता में प्रबंधकीय ज्ञान का एक विशाल भंडार है। यह प्रबंधन की सही मायनों में गोल्डन बुक है। यह गीता जो सभी ग्रंथो का एक प्रतीक है ? प्रबंधकीय कार्यो एवं सिद्वान्तों विशेषकर जो 20वीं शताब्दी मे पश्चिम के प्रबंधकों द्वारा लोकप्रिय बनाए गए, को एक साकार रूप प्रदान करती है — ऐसा नवीन माथुर लिखते है।

भारत के पास प्राचीन ज्ञान के कई स्त्रोत है। वेद, प्राचीन ग्रंथों का संग्रह, उपनिषद, पुराण, इतिहास, भगवद्गीता एवं महाभारत तथा रामायण जैसे महाकाव्य, सभी प्रबंध सिद्वान्त और व्यवहार के कई खजानों को समाहित किए हुए है। इन ग्रंथों मे निहित ज्ञान को वर्तमान भारतीय प्रबंधन समस्याओं में एवं पश्चिमी विचारों को भारतीय सोच। विचारधारा के रंग—ढंग मे परिवर्तित करने हेतु लागू किया जा सकता है— ऐसे विचार प्रिया राजीव द्वारा व्यक्त किए गए है।

नलिनी डवे के निम्नलिखित शब्द प्रबंधन एवं वेदान्त के रिश्ते को बड़ी खूबसूरती से व्यक्त करते हैः— प्रबंधन के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करने हेतु वेदान्त में बहुत सी बाते है जैसे — प्रेरणा, एक उचित कार्यशैली का विकास आदि। यह स्व—प्रबंध जो अन्य बातों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, की भी शिक्षा देता है।

महाभारत एवं प्रबंधन के संबंध में डॉ. एन.एम. खण्डेलवाल के विचार निम्नानुसार हैः— इस महाकाव्य में एक लाख श्लोक शामिल है और यह अठारह भागों में विभाजित है। यह भारतीय वैदिक और वेदों के दर्शन के रत्नों को संयोजित किए हुए है तथा प्रबंधन अवधारणाओं एवं प्रथाओं की धरोहर है। वे कहते है— अमेरिकी प्रबंधन मात्र 100 वर्ष पुराना है महाभारत महाकाव्य पर आधारित भारतीय प्रबंधकीय अवधारणाएँ 5200 वर्ष पुरानी है।

रामचरितमानस से प्रबंधन के संबंध को स्थापित करने हेतु डॉ. एन.एम. खण्डेलवाल ने एक श्रमसाध्य शोध किया। यह कहा गया है कि :— यह (रामायण) समकालीन प्रासंगिता के महान प्रबंधकीय पाठों को समायोजित किए हुए है। यह एक भौतिक संसाधनों से विहीन परन्तु अदृश्य संसाधनों से (समुद्र बुद्वि एवं हृदय तथा उच्च नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के नेतृत्व की गुणवता) धनवान तथा एक समर्पित कार्यपालिका द्वारा सहयोगित एवं एक पराक्रमी जो बहुत धनवान था तथा तकनीक और संसाधनों से युक्त था परन्तु नैतिकता की दृष्टि से कमजोर था, के मध्य एक सफल युद्ध की घटना है।

अध्ययन में अंतर

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विभिन्न भारतीय हस्तियों और भारतीय दर्शन को प्रबंधन से संबंधित करने हेतु अनेक कार्य एवं शोध किये जा चुके है परन्तु स्वामी विवेकानन्द के विषय में ऐसा नहीं हुआ है। इस शोधपत्र के माध्यम से इस अंतर को पूरा करने का प्रयास किया गया है।

शोध के उद्देश्य

विस्तृत उद्देश्य निम्नानुसार हैः—

1. प्रबंधन के क्षेत्र में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की उपयोगिता का अध्ययन करने के लिए
2. विवेकानन्द दर्शन के माध्यम से आध्यात्मिकता और प्रबंधन के मध्य संबंध को अध्ययन करने हेतु।
3. भारतीय दर्शन और प्रबंधन अवधारणाओं और सिद्वान्तों के संबंध का अध्ययन करने हेतु
4. और अन्य अनुसंधान एवं शोध के लिए नए खाके खोलने हेतु।

शोध की विधि

मूलतः यह अध्ययन प्रकृति के आधार पर विवरणात्मक है। यह विवेकानन्द की लिखित सामग्री का विश्लेषण करने तक ही सीमित है। इस अध्ययन हेतु डाटा एकत्रित करने के लिए वृत्तचित्र विश्लेषण और लाइब्रेरी अनुसंधान का प्रयोग किया गया है। ''विवेकानन्द भाग 1

से 10 तक प्रासंगिक भागों का अध्ययन एवं विश्लेषण भी किया गया। इसके अतिरिक्त रामकृष्ण विद्या मंदिर, विवेकानन्द नीडम से संबंधित व्यक्तियों एवं उद्योगपतियों से साक्षात्कार भी किया गया है।

स्वामी विवेकानन्द एवं नियोजन

एक सुनियोजित कार्य सदैव ही बेहतर होता है क्योंकि वह असंभव कार्यों को भी संभव बना देता है। योजना–हीन कोई भी संगठन, व्यवसाय, कार्य अथवा जीवनशैली, बिना पतवार के जहाज के समान है। किसी ने सही कहा है कि, आज की गई योजना हमारे आने वाले कल की कठिनाईयों को टाल देती है।

नियोजन एक बौद्धिक प्रक्रिया है, कार्य को व्यवस्थित ढंग से करने की मानसिक–प्रवृत्ति है, करने से पूर्व विचार करने एवं तथ्यों के प्रकाश में, न कि अनुमानों के आधार पर, कार्य करने की प्रक्रिया है।[1] संगठनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक क्रियाओं को निर्धारित करने हेतु भविष्य के सम्बन्ध में सूचनाओं का चयन तथा मान्यताओं का निर्धारण करना ही नियोजन है।

हैनरी फेऑल के अनुसार ''किसी भी संगठन या प्रबंधन का मुख्य प्रदर्शन और सर्वाधिक प्रभावकारी उपकरण उसकी कार्य–योजना है। किसी भी दुर्गम प्रतिफल को परिणाम से ''योजना'' ही विभाजित कर पाती है। वह किसी भी संगठन के कार्य को एक पूर्व–विवेक प्रदान करती है। फेऑल के अनुसार अनुभव ही वह एक संपदा है जिससे एक व्यावहारिक योजना का निर्माण हो सकता है।

योजना का निर्माण एवं योजनाबद्ध ढंग से कार्य करना स्वामी विवेकानन्द की कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग था। उनका जीवनकाल ''योजना–प्रक्रिया'' को दर्शाता है। (चित्र–1)

तीन वर्षों के भारत–भ्रमण में स्वामी विवेकानन्द ने भारत की समस्याओं को जाना एवं उनके कारणों को समझा। यही नहीं, उन्होंने इन समस्याओं से निजात पाने हेतु भावी योजना भी बनाई, जिसे आगे चलकर कार्यान्वित भी किया।

चित्र–1

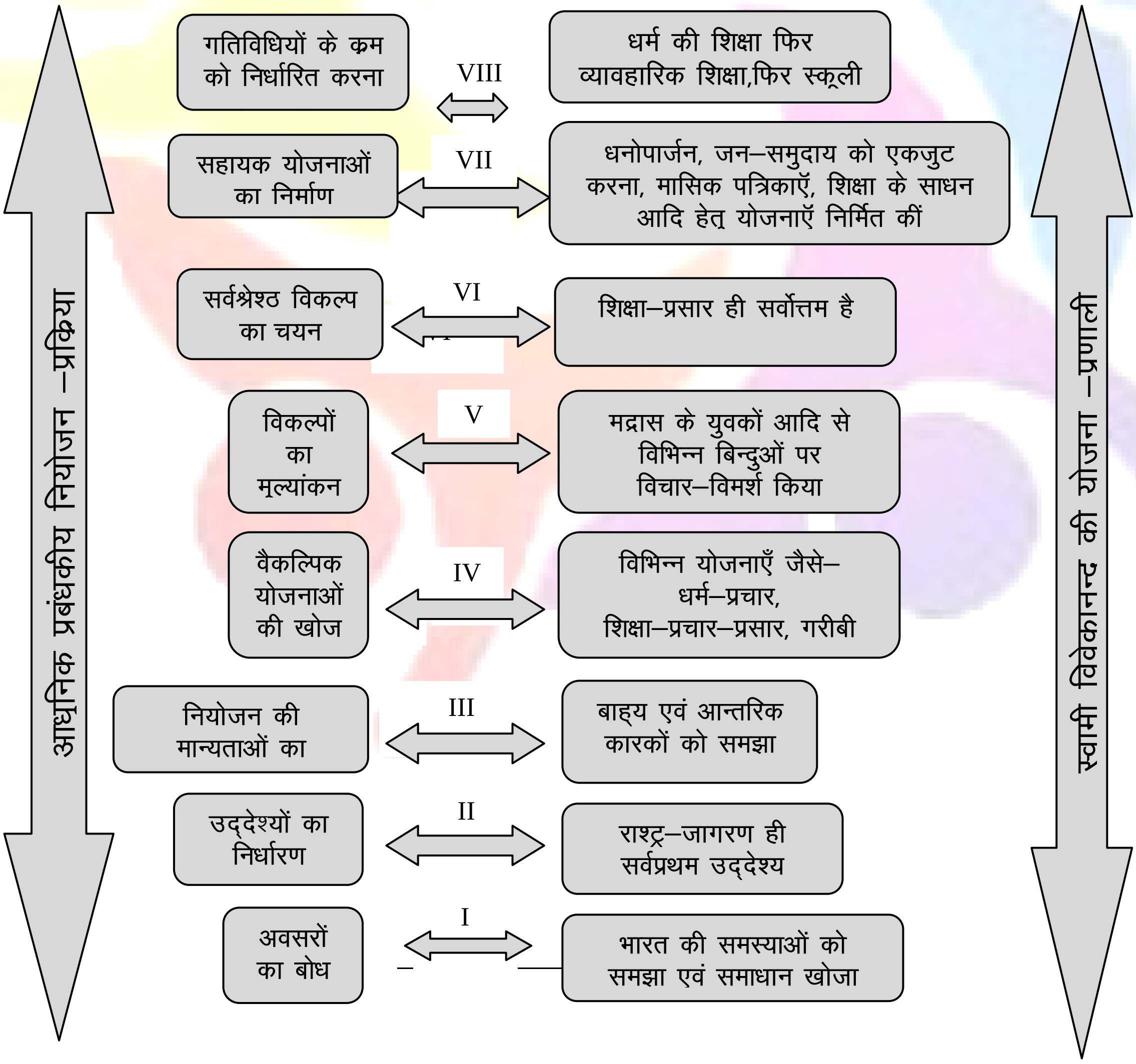

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved

इस खोजयात्रा में उन्होंने पाया कि भारत में वर्षों से दासता, आर्थिक विपन्नता से ग्रसित लोगों का डगमगाया हुआ आत्मविश्वास, जातिगत भेदभाव, ऊँच–नीच, छुआछूत, अंधविश्वास जैसी समस्याएँ व्याप्त हैं। इन समस्याओं का कारण धर्म नहीं अपितु, अशिक्षा, महिलाओं की उपेक्षा, खेती और उद्यमों से उत्पादन बढ़ाने हेतु ज्ञान के उपयोग का अभाव, भारत का विश्व–समुदाय से जीवन्त संपर्क काट लेना, आदि हैं।

स्वामी जी भारत की समस्याओं के संदर्भ में कहते हैं – ''जो भी अशिक्षित विदेशी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता हुआ भारत में पहुँचता है, वह रेल पर से भारत को उड़ती नज़र से देख भर लेता है और बस, फिर भारत की भयानक बुराइयों पर बड़ा सारगर्भित व्याख्यान देने लगता है। हम जानते हैं कि यहाँ बुराइयाँ हैं। पर बुराई तो हर कोई दिखा सकता है। मानव समाज का सच्चा हितैषी तो वह है, जो इन कठिनाईयों से बाहर निकलने का उपाय बताए। हम लोगों ने बहुत व्याख्यान सुन लिए, बहुत सी संस्थाएँ देख लीं, बहुत से पत्र पढ़ लिए, अब तो ऐसा मनुष्य चाहिए, जो अपने हाथ का सहारा दे, हमें इन दुखों से बाहर निकाल दे। .... बस उसी आदमी की हमें ज़रूरत है।''''.. .. इसके बाद एक और महत्वपूर्ण विषय पर हमें विचार करना है। भारतवर्ष में हमारा शासन सदैव राजाओं द्वारा हुआ है। राजाओं ने ही हमारे सब कानून बनाए हैं। अब वे राजा नहीं हैं, और इस विषय में अग्रसर होने के लिए हमें मार्ग दिखानेवाला, अब कोई नहीं रहा। सरकार साहस नहीं करती। वह तो जनमत की गति देखकर ही अपनी कार्य–प्रणाली निश्चित करती है। अपनी समस्याओं को हल कर लेनेवाला एक कल्याणकारी और प्रबल लोकमत स्थापित करने में समय लगता है – काफी लम्बा समय लगता है, और इस बीच हमें प्रतीक्षा करनी होगी। अतएव सामाजिक सुधार की संपूर्ण समस्या यह रूप लेती है : कहाँ हैं वे लोग, जो सुधार चाहते हैं ? पहले उन्हें तैयार करो। सुधार चाहने वाले लोग हैं कहाँ ? कुछ थोड़े से लोग किसी बात को उचित समझते हैं और बस उसे अन्य सब पर ज़बरदस्ती लादना चाहते हैं। .....राष्ट्र में आज प्रगति क्यों नहीं हैं ? क्यों वह जड़भावापन्न हैं ? पहले राष्ट्र को शिक्षित करो, अपनी निजी विधायक संस्थाएँ बनाओ, फिर तो कानून आप ही आ जाएँगे। जिस शक्ति के बल से, जिसके अनुमोदन से कानून का गठन होगा, पहले उसकी सृष्टि करो। .... अतएव समाज–सुधार के लिए भी प्रथम कर्त्तव्य है – लोगों को शिक्षित करना। और जब तक यह कार्य सम्पन्न नहीं होता, तब तक प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी।'' यहाँ स्वामी विवेकानन्द आधुनिक प्रबंधन के नियोजन प्रक्रिया के प्रथम चरण –''अवसरों का बोध करना'' को निभाते हुए समझ आते हैं। 'अवसरों का बोध करना' चरण में, किसी भी संस्था की शक्तियों, लक्ष्यों, अभिलाषाओं को ध्यान में रखते हुए उसकी वस्तुस्थिति का ज्ञान एवं संभव सुअवसरों का पूर्वानुमान तथा अवसरों को पूर्णतः स्पष्ट रूप से देखने की क्षमता, निहित होती है।'' हालांकि यह वास्तविक नियोजन से बहुत पहले आता है और इसलिए स्पष्टता से नियोजन प्रक्रिया का भाग नहीं कहा जा सकता। संगठन के बाह्य एवं आंतरिक वातावरण में अवसरों की जानकारी होना ही नियोजन का प्रारंभिक बिंदु (चरण) है। सभी प्रबंधकों को भविष्य के भावी अवसरों पर एक प्राथमिक दृष्टि डालनी चाहिए। और उन्हें स्पष्टता एवं पूर्णता से देखना चाहिए और यह ज्ञात कर लेना चाहिए कि वे उनकी शक्तियों व कमियों के आधार पर कहाँ हैं ? उन्हें यह समझना चाहिए कि वे किन और क्या लाभों की अपेक्षा रखते हैं। सही मायनों में उद्देश्यों को निर्धारित करने के लिए अवसरों का विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है।

स्वामी विवेकानन्द नियोजन–प्रक्रिया के इस चरण को निभाते हुए भारत की समस्याओं का वि लेशण एवं संभव निराकरणों को ज्ञात करते हुए कहते हैं – ''भारत के पिछड़ेपन का कारण है– अशिक्षा, समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, डगमगाया हुआ आत्मवि वास आदि और उनके समाधान के साधन हो सकते हैं :– शिक्षा, रोजगार, धार्मिक प्रवचन आदि।'' क्योंकि वे जानते थे कि हम भारतीयों के जीवन में धर्म है, हम आध्यात्मिक हैं और इसी आध्यात्मिकता के सही ज्ञान से हमारा विकास निश्चित है।

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि, स्वामी जी की चिंता का विषय ''भारत की दुर्दशा'' थी। जिससे व्यथित होकर उन्होनें उनसे निजात पाने के लिए विभिन्न योजनाओं का निर्माण किया। स्वामी जी ने उद्देश्य तो निश्चित कर लिया था – ''राष्ट्र जागरण– राष्ट्रोत्थान' परन्तु अब प्रश्न यह था कि क्या वे अपनी राष्ट्रभूमि के जागरण के लिए कुछ कर सकते थे? उन्हें करना ही होगा।

कोई अच्छे कार्य हेतु सोच सकता है, इस हेतु प्रयास कर सकता है। परन्तु हो सकता है कि कुछ अच्छा करने के लिए योजना न हो और अगर हो भी तो पर्याप्त साधन न हो। इसी सोच–विचार के मध्य स्वामी विवेकानन्द को अचानक यह समझ में आया कि पश्चिम से उन्हें इस हेतु सहायता मिल सकती है। स्वामी जी अपने इस विचार के संदर्भ में लिखते हैं – ''इसलिए हम लोगों को विदेशों की यात्रा करनी चाहिए। यदि हम अपने को एक सुसंगठित राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं तो हमें यह जानना चाहिए कि दूसरे देशों में किस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था चल रही है और साथ ही हमें मुक्त हृदय से दूसरे राष्ट्रों से विचार विनिमय करते रहना चाहिए। सबसे बड़ी बात यह है कि हमें गरीबों पर अत्याचार करना एकदम बन्द कर देना चाहिए।

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने लगभग मन बना लिया था और एक ढाँचा भी तैयार कर लिया था; यह जानते हुए कि यह सब उनके विक्षिप्त मन की उत्पत्ति है जिसका कार्यान्वित होना निश्चित नहीं था फिर भी, झिझकते हुए और संदेहपूर्ण मन से उन्होंने अपने विचारों और योजना को मद्रास के युवकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

उन्होनें कहा – जहाँ तक आध्यात्मिकता का प्रश्न है अमेरिका के लोग हमसे अत्यंत निम्न स्तर पर हैं, परन्तु इनका समाज हमारे समाज की अपेक्षा अत्यन्त उन्नत है। हम इन्हें आध्यात्मिकता सिखायेगें और इनके समाज के गुणों को हम ग्रहण करेंगे।'' स्वामी जी आगे कहते हैं –''... तब फिर मेरी योजना क्या है ? मेरी योजना है– प्राचीन प्राचार्यों के उपदेशों का अनुसरण करना।... हमें भी सबसे अदभुद्

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

कार्य करना है। आज अवस्था कुछ बदल गयी है, इसलिए कार्य–प्रणाली में कुछ थोडा–सा परिवर्तन करना होगा। बस इतना ही, इससे अधिक कुछ नहीं।....भारतवर्ष में धार्मिक जीवन ही राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र है और वही राष्ट्रीय जीवनरूपी संगीत का प्रधान स्वर है।... इसी भाँति भारत में सामाजिक सुधार का प्रचार भी तभी हो सकता है, जब यह दिखा दिया जाये कि उस नई प्रथा से आध्यात्मिक जीवन की उन्नति में कौन–सी प्रमुख विशेष सहायता मिलेगी। राजनीति का प्रचार करने के लिए हमें दिखाना होगा कि उसके द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन की आकांक्षा – आध्यात्मिक उन्नति – की कितनी अधिक पूर्ति हो सकेगी...।''

उपर्युक्त गद्यांशों के अनुसार स्वामी विवेकानन्द ने नियोजन प्रक्रिया के द्वितीय चरण '' उद्देश्यों का निर्धारण करना '', (नियोजन–प्रक्रिया का प्रारंभ नियोजन के उद्देश्यों का निर्धारण करके किया जाता है। सर्वप्रथम सम्पूर्ण संस्था के नियोजन के उद्देश्यों का निर्धारण कर लेने पर ही योजना को निश्चित स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उद्देश्यों का निर्धारण करने से ही यह हो सकता है कि उन उद्दश्यों को पूरा करने के लिए किसी नये नियोजन की आवश्यकता पड़ेगी या किसी पुरानी योजना में सुधार करना पड़ेगा, आदि।) का अनुसरण किया।

स्वामी विवेकानन्द ने प्रबंधन–प्रक्रिया के इस क्रम में ''राष्ट्र–जागरण'' को सर्वप्रथम (मुख्य) उद्देश्य के रूप में निर्धारित किया । तथैव नियोजन प्रक्रिया के तृतीय चरण – ''नियोजन की मान्यताओं का निर्धारण'' को भी निभाया। ''नियोजन की मान्यताओं का निर्धारण'' से तात्पर्य है– गंभीर नियोजन की मान्यताओं (जैसे कि–प्रयोज्य (उचित) मूल नीतियों एवं विद्यमान संगठन की योजनाओं का पूर्वानुमान करना) को निर्धारित करना, उनका संचार करना एवं सबको इनके उपयोग के लिए सहमत करना, उस वातावरण की कल्पना है जिसमें कि, योजनाओं को कार्यान्वित करना है। नियोजन की मान्यताओं का मुख्य सिद्धान्त है– जितना अधिक व्यक्ति नियोजन को समझेगा एवं नियमित मान्यताओं का उपयोग करने के लिए सहमत होगा उतनी ही अधिक समन्वित होगी संस्था की योजना।

स्वामी विवेकानन्द ने लक्ष्य को सुस्पष्ट किया– ''राष्ट्रजागरण एवं पुनरूत्थान'', अपने सहयोगियों को भी उन लक्ष्यों से परिचित कराया एवं लक्ष्यों के औचित्य पर उनसे विचार–विमर्श करते हुऐ उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु क्या कार्य–प्रणाली हो सुनिश्चित की एवं हर प्रकार के लघु एवं आंतरिक कारकों से भी अवगत कराया। ऐसा करते हुए जहाँ स्वामी जी ने नियोजन–प्रक्रिया के तीसरे चरण ''नियोजन की मान्यता'' को कार्यान्वित किया वहीं ''उद्देश्य निहित प्रबंध'' को भी महत्व दिया। उद्देश्यों को निर्धारित करना प्रबंधन का महत्वपूर्ण कार्य है। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति भी प्रबंधन केलिए बहुत आवश्यक होती हैं।

उद्देश्य निहित प्रबंध (डठव्) से तात्पर्य है उद्देश्यों को निर्धारित करना एवं प्रबंधन प्रक्रिया के द्वारा उन उद्देश्यों (निर्धारित लक्ष्यों) को प्राप्त करना। उद्देश्य निहित प्रबंध में, प्रबंधन द्वारा उद्देश्यों को विस्तार से निर्धारित किया जाता है। प्रबंधन यह प्रयास करता है कि संगठन के कर्मचारियों द्वारा इन उद्देश्यों को अपनाया जाए, जिसे निर्देशित एवं नियंत्रित किया जाए जिससे कि इन लक्ष्यों को सुगमता से प्राप्त किया जा सके। अर्थात् यह वह प्रक्रिया है जहाँ अधिकारी एवं अधीनस्थ अधिकारी सार्वजनिक उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं, प्रत्येक के योगदान का मूल्यांकन करते हैं एवं संगठन में समाकलन करते हैं, जिससे कि संसाधनों का अधिकतम एवं सर्वश्रेष्ठ उपयोग हो सके। यह प्रबंधकीय–कार्यों के समाकलन करने की व्यवस्था (पद्धति) है। अतएव, प्रबंधन निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति पर ध्यान केन्द्रित करता है।

जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने भारत यात्रा की (भारत–भ्रमण किया), फिर विदेश यात्रा की ओर कोलम्बो से अलमोड़ा तक व्याख्यान दिए, उनसे यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार स्वामी जी ने भारत की समस्याओं और उनके समाधानों को निर्धारित किया और इसके उपरान्त अपने विचारों का अनुसरण करने एवं इनको कार्यान्वित करने के लिए युवकों को सहमत और प्रेरित किया अर्थात् ध्यान दिया जाए तो स्वामी विवेकानन्द ने उद्देश्य निहित प्रबंध (डठव्) को बखूब ही निभाया।

उनके इस प्रारंभिक और अविकसित विचार (स्वप्न) को व्यावहारिक रूप कन्याकुमारी में मिला। वे अपने इस अनुभव के संदर्भ में एक पत्र में लिखते हैं – ''...मैंने एक योजना सोची थी तथा उसे कार्यान्वित करने का मैंने दृढ़ संकल्प किया। कन्याकुमारी में माता कुमारी के मंदिर में बैठकर, भारतवर्ष की अंतिम चट्टान पर बैठकर मैंने सोचा कि हम जो इतने संन्यासी घूमते फिरते हैं और लोगों को दर्शनशास्त्र की शिक्षा दे रहे हैं, यह सब निरा पागलपन है। क्या हमारे गुरूदेव नहीं कहा करते थे कि खाली पेट से धर्म नहीं होता ? वे जो गरीब जानवरों–सा जीवन व्यतीत कर रहे हैं उसका कारण अज्ञान है। हम युग–युग से.... ।....कल्पना करो, यदि कोई निःस्वार्थ परोपकारी संन्यासी गाँव–गाँव विद्यादान करते फिरें और भाँति– भाँति के उपाय से मानचित्र, कैमरा भूगोलक आदि के सहारे चण्डाल तक सबकि उन्नति के लिए घूमें तो क्या इससे समय पर मंगल होगा या नहीं ? बात यह है कि ''यदि पहाड़ मुहम्मद के पास न आए तो मुहम्मद को पहाड़ के पास जाना होगा। अर्थात्, यदि गरीब के लड़के, विद्यालयों में न आए.... ।... हमारी जाति अपनी स्वंतत्र सत्ता खो बैठी है और यही भारत की सारी आपत्ति का कारण है।... हमें जाति को उसकी खोई हुई स्वंतत्र सत्ता वापस देनी होगी और निम्नजातियों को उठाना होगा। उनको उठाने वाली शक्ति भी अंदर से ही आएगी। प्रत्येक देश में बुराईयाँ धर्म के कारण नहीं, बल्कि धर्म को न मानने के कारण ही विद्यमान रहती हैं।... इसे करने के लिए पहले लोग चाहिए, फिर धन। मेरे गुरूदेव की कृपा से मुझे हर एक शहर में दस–पन्द्रह आदमी मिलेंगे। मैं धन की चिन्ता में घूमा , पर भारतवर्ष के लोग भला धन से सहायता करेंगे !!.... इसलिए मैं अमेरिका आया हूँ, स्वयं धन कमाऊँगा और तब देश लौटकर अपने जीवन के इस एकमात्र ध्येय की सिद्धि के लिए अपना शेष जीवन न्यौछावर कर दूँगा।''

इस पत्र से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द ने मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कई प्रकार की अन्य योजनाएँ बनाई जैसे–लोगों को एकजुट करना, शिक्षा का प्रचार–प्रसार, जन–जागरण आदि और ऐसा करते हुए उन्होंने चौथे चरण–''वैकल्पिक योजनाओं की खोज'' को निभाया। इस चरण में वैकल्पिक योजनाओं की खोज की जाती है एवं उनका परीक्षण किया जाता है। शायद ही ऐसी कोई योजना होगी जिसके लिए उचित (न्यायसंगत) विकल्प विद्यमान न हो और अधिकतर जो विकल्प स्वाभाविक नहीं लगता है वही, सर्वश्रेष्ठ होता है।

तदोपरान्त स्वामी विवेकानन्द ने पांचवे चरण '' विकल्पों के मूल्यांकन'' को निभाया। वैकल्पिक योजनाओं को निर्धारित करने एवं उसके प्रबल एवं दुर्लभ बिन्दुओं का निरीक्षण करने के पश्चात् अगला चरण मान्यताओं एवं लक्ष्यों के आधार पर विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण करना है। एक विकल्प बहुत अधिक लाभकारी प्रतीत होगा किन्तु उसमें बहुत धन की आवश्यकता हो सकती है और दूसरा काम लाभप्रद प्रतीत होगा और उसमें कम संकट हो सकता है, और संभवतः तीसरा, संस्था के दीर्घकालिक उद्देश्यों के अनुसार अधिक उचित हो सकता हैं।

स्वामी विवेकान्नद ने उनके द्वारा निर्धारित विभिन्न विकल्पों का गहराई से अध्ययन एवं मूल्यांकन किया। प्रत्येक विकल्प का अध्ययन कर सर्वश्रेष्ठ विकल्प– 'सर्वशिक्षा' का चयन करते हुये नियोजन प्रक्रिया के छठवे चरण–''सर्वश्रेश्ठ विकल्प का चयन'', को भी निभाया। यह वह स्थिति है जब योजना को अपनाया जाता है अर्थात् वह स्थिति जब निर्णय लिया जाता है। कभी–कभी विकल्पों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन दो या दो से अधिक विकल्पों का सुझाव दे सकता है और प्रबंध किसी एक विकल्प का अनुसरण करने के स्थान पर कई विकल्पों का अनुसरण करने का निर्णय ले सकता है। स्वामी जी का मुख्य उद्देश्य था ''राष्ट्र–जागरण'', परन्तु, यह कैसे संभव हो–लोगों को शिक्षित कर , धर्म–प्रचार कर, आत्मविश्वास जगाकर आदि ? इन विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हुआ कि व्यक्तियों को शिक्षित करना उपयुक्त है, क्योंकि उन्हें शिक्षित कर देने से शेष सब स्वतः ही हो जाएगा।

स्वामी विवेकानन्द ने अपनी कार्य–प्रणाली में सहायक–योजनाओं को भी उचित स्थान दिया। उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उनकी सर्वप्रथम आवश्यकता थी – जनसमुदाय की । वे लिखते हैं – ''अब प्रश्न यह है कि काम करने वाले लोग कहाँ हैं ? मूल प्रश्न यही है। मनुष्यों की, केवल मनुष्यों की आवश्यकता है।'' वे आगे लिखते हैं – ''मद्रास ऐसे कितने निःस्वार्थी और सच्चे युवक देने के लिए तैयार है जो गरीबों के साथ सहानुभूति रखने के लिए, भूखों को अन्न देन के लिए और सर्वसाधारण में नवजागृति का प्रचार करने के लिए प्राणों की बाज़ी लगाकर प्रयत्न करने को तैयार हैं ....।'' मनुष्यों को एकत्रित कर लेने से ध्येय की प्राप्ति संभव नहीं है। इसी भाव में स्वामी विवेकानन्द लिखते हैं – '' इसके लिए एक नियन्त्रित कार्यप्रणाली की आवश्यकता है, जो पुनः धन पर निर्भर रहती है। इस प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने के लिए भारत में मनुष्य तो हैं, पर हाय ! वे निर्धन हैं। किसी पहिये को पहले–पहले गतिशील करना बड़ा कठिन काम है, पर एक बार गतिशील हुआ कि वह क्रमशः अधिकाधिक वेग से चलने लगता है।'' धनोर्पाजन करने के उद्देश्य से ही वे अमेरिका गये थे। छोटे–छोटे कार्यों को सम्पन्न करते हुए ही हम मुख्य लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं। अतः स्वामी विवेकानन्द ने भी कई अन्य कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करना आवश्यक समझा, उदाहरणात्– उन्होंने समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, केन्द्र–गठन, गरीबों की सेवा, आदि को भी आवश्यक समझा। यह तथ्य निम्न उल्लेखों से स्पष्ट होता है –

स्वामी विवेकानन्द एक पत्र में लिखते हैं– ''तुम लोगों को एक मासिक–पत्रिका का सम्पादन करना होगा। उसमें आधी बंगला होगी, आधी–हिन्दी, हो सके तो एक अंग्रेजी में भी।'' वे अन्यत्र लिखते हैं– ''...तुम लोग अग्नि की तरह चारों ओर फैल जाओ और उस विराट (जनसाधारण) की उपासना का प्रचार करो।'' वे फिर लिखते हैं– ''...अब तुम भारत में इन सभाओं के ढंग पर अपने आप को संगठित करने की चेष्टा करो।'' ''...केन्द्र बना सकना बहुत ही उत्तम बात होगी। मद्रास जैसे बड़े शहर में इसके लिये स्थान प्राप्त करने का यत्न करो और संजीवनी शक्ति का चारों ओर प्रसार करो। धीरे–धीरे प्रांरभ करो पहले ग्रहस्थ प्रचारकों से श्रीगणेश करो, धीरे–धीरे वे लोग भी आने लगेंगे जो इस काम के लिए अपना जीवन समर्पण कर देंगें।'' यहाँ स्वामी जी सहायक–योजनाओं के संदर्भ में कह रहे हैं। मूल योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए अधिकतर कई सहायक योजनाओं की आवश्यकता पड़ती है अर्थात्, मुख्य योजना के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सहायक योजनाओं का निर्माण किया जाता है। किसी भी संस्था में विभिन्न प्रकार के सहायक योजनाओं को कार्यान्वित किया जा सकता है, जैसे– कच्चे माल की खरीददारी, कार्यकर्ताओं का गठन, नए–नए उत्पादों का निर्माण आदि। इन सभी योजनाओं का जन्म मुख्य उद्देश्य से ही होता है, अतः इन्हें सहायक योजना कहा जाता है।

अंततः बारी आती है यह निश्चित करने की कौन–सा कार्य कब किया जाएगा, उसे कौन कार्यान्वित करेगा और कैसे? स्वामी विवेकानन्द ने अपनी योजना के संदर्भ में मित्रों से लिखना एवं विचार–विमर्श करना प्रांरभ किया। नवम्बर से उन्होंने अपनी योजनाओं के साथ स्वदेश की ओर प्रस्थान किया। वे अपनी कार्यप्रणाली के बारे में कहते है– ''...अतः भारत में, किसी प्रकार सुधार या उन्नति की चेष्टा करने से पहले, धर्म–प्रचार आवश्यक है। भारत को समाजवादी अथवा राजनैतिक विचारों से प्लावित करने से पहले आवश्यक है कि उसमें आध्यात्मिक विचारों की बाढ़ ला दी जाये।'' ''...सर्वप्रथम हमारे उपनिषदों, पुराणों और अन्य सब शास्त्रों में जो अपूर्व सत्य छिपे हुए है, उन्हें सब ग्रन्थों के पन्नों से बाहर निकालकर, मठों की.... देश में सर्वत्र बिखेर देना होगा। सबसे पहले हमें यही करना होगा। सभी को इन सब शास्त्रों में निहित उपदेश सुनाने होंगे। ''पहले धर्म–प्रचार आवश्यक है। धर्म–प्रचार करने के बाद उसके साथ ही साथ लौकिक विद्या और

अन्यान्य आवश्यक विद्याएँ आप ही आ जायेंगी।'' ''इसलिए, मेरे मित्रों, मेरा विचार है कि मैं भारत में कुछ ऐसे शिक्षालय स्थापित करूँ, जहाँ हमारे नवयुवक अपने शास्त्रों के ज्ञान में शिक्षित होकर भारत तथा भारत के बाहर अपने धर्म का प्रचार कर सकें...।''

स्वामी विवेकानन्द की कार्य–पद्धति एवं कार्य–प्रणाली का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनकी योजना में अर्विक द्वारा निर्धारित नियोजन–प्रक्रिया के सभी गुणों का समावेश है। स्वामी जी की योजना–प्रणाली स्पष्ट रूप से परिभाषित उद्देश्यों पर आधारित है। वे चाहते थे कि उनके राष्ट्र का विकास हो प्रत्येक व्यक्ति (नागरिक) प्रसन्न रहे अर्थात् वे '' सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु , मा कश्चिद् दुःखभागः।।'' की स्थिति भारत में उत्पन्न करना चाहते थे। उनकी यह योजना बहुत ही सरल एवं सुगम थी क्योंकि यह '' आत्मनों मोक्षार्थम् जगतहिताय च।।'' पर आधारित थी। अर्थात्, इस योजना में प्रत्येक जन मोक्ष की प्राप्ति हेतु जनहित में कार्य कर रहा था। इस योजना में यथार्थता एवं न्यमता के प्रबल गुण भी उपस्थित थे।

सम्भवतः स्वामी विवेकानन्द की नियोजन–प्रक्रिया के गुण ही वह कारण हैं जो, लगभग 100 वर्ष पूर्व बनाई गई योजना आज भी प्रभावी है, जीवन्त है और भविष्य में भी जीवन्त रहेगी।

अध्ययन का महत्व

किसी भी व्यवसाय तथा विशेष रूप से प्रबंध का इतिहास यह प्रस्तावित करता है कि व्यवसाय का पद प्राप्त करने हेतु मजबूत मूल आधार का होना आवश्यक है। इस मूल आधार अथवा नीति शास्त्र का होना आवश्यक है क्योंकि यह क्लाइंट सिस्टम और व्यवसायियों को मूल्यांकन करने का एक आधार प्रदान करता है और उनके ज्ञान, संगठन एवं पद्धति को संशोधित करने का भी आधार प्रदान करता है । इनमें से एक भी मूल्यांकन मानकों के बिना किसी भी व्यवसाय की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसी प्रकार, यह मूल आधार स्थिर नहीं है। यह वास्तविकताओं और एक व्यवसाय के आंतरिक एवं बाह्य स्त्रोतों के माध्यम से मांगों में आए बदलावों के अनुसार संशोधित किया जाता है।

इस अध्ययन के महत्व को, विकास के उस चरण से जहां मन पहुंच गया है, देखा जाना चाहिये। इस सदी के प्रारंभ में, विश्व ने और विशेषरूप से पश्चिमी देशों ने कार्ल मार्क्स और सिग्मंड फ्रियूड ';पहउनदक थ्तमनकद्ध के शक्तिशाली प्रभाव को देखा है। मार्क्स ने आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन तथा फ्रियूड ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में विश्व की सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया हैं हालांकि एरिक फ्राम द्वारा सेन सोसायटी ';दम ेवबपमजल) में दर्शाये गये संचयी सोच एवं अनुभवों ने हमें मानवता की उन्नति की और ध्यान देने की दिशा प्रदान की है। वास्तविकता के विभिन्न आयामों को सोचने, जानने और समझने में सहायता प्रदान करने में स्वामी विवेकानन्द का जो योगदान रहा है, वह मानव – विकास के लिये किये गये अनेक प्रयासों में से एक है। मैं अद्धृत करना चाहूंगी – ''हिन्दुओं के विचारों को अंग्रेजी विचारों से मिश्रित कर, निराधार दर्शनशास्त्र से ऐसे धर्म की उत्पत्ति जो सरल सहज, साधारण, लोकप्रिय एवं प्रत्येक मन की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके, वही कर सकता है जो प्रयासरत हो। अर्थात् अद्वैत का जीवंत बनाना होगा ओर यह सब इतना सहज होना चाहिये की एक बालक भी उसे समझ कर अपना सके। यही मेरे जीवन का ध्येय है।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एल.एफ. उर्विक, ''द एलीमेंट्स ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन'', द्वितीय संस्करण, सर आइसैक पिटमैन एण्ड संस, लंडन, 1947, पृ. 33
2. जॉर्ज आर. टैरी, ''प्रिंसिपल्स ऑफ मैनेजमेन्ट'', तृतीय संस्करण, होमवुड, 1988,पृ. 157
3. हेनरी फेयोल, ''द एडमिनिस्ट्रेटिव थ्योरी इन द स्टेट'', पेपर्स इन द साइंस ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन में, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 1937, पृ. 45
4. पइपक, पृ. 43–45
5. ''लैक्चर्स फ्रम कोलम्बो टू अलमोड़ा : स्वामी विवेकानन्द'', अद्वैत आश्रम, जुलाई, 1998, पृ. 130
6. पइपक, पृ. 131
7. अग्निमंत्र स्वामी विवेकानन्द के चुने हुए पत्र : स्वामी विवेकानन्द,रामकृश्ण मठ, जून, 2003, पृ. 4
8. विवेकानन्द साहित्य, द्वितीय खण्ड, अद्वैत आश्रम, मार्च 2002, पृ. 316
9. ''लैक्चर्स फ्रम कोलम्बो टू अलमोड़ : स्वामी विवेकानन्द'', पइपक, पृ. 136–137
10. डॉ. अशोक कुमार बोहरा
11. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 45–46
12. एकनाथ रानडे, उत्तिश्ठत जागृत्, विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी, अप्रेल 1990, पृ. 113
13. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 13
14. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 65
15. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 90
16. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 85
17. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 93

18. अग्निमंत्र, पइपक, पृ. 54
19. ''लैक्चर्स फ्रम कोलम्बो टू अलमोड़ा : स्वामी विवेकानन्द'', पइपक, पृ. 137
20. ''लैक्चर्स फ्रम कोलम्बो टू अलमोड़ा : स्वामी विवेकानन्द'', पइपक, पृ. 140
21. ''लैक्चर्स फ्रम कोलम्बो टू अलमोड़ा : स्वामी विवेकानन्द'', पइपक, पृ. 140
22. एल.एफ. उर्विक, ''द पैटर्न ऑफ मैनेजमेन्ट'',सर आइसैक पिटमैन एण्ड संस, लंडन, 1956ए
23. डॉ. अशोक कुमार बोहरा

- विवेकानन्द साहित्य, खण्ड1 से खण्ड – 10, अद्वैत आश्रम
- विवेकानन्द : एक जीवनी, स्वामी निखिलानन्द
- स्वामी विवेकानन्द इन द वेस्ट, न्यू डिस्कवरीज : द वर्ड टीचर, मैरी लूस बुर्के।
- स्वामी विवेकानन्छ : हिस सैकेण्ड विसिट टू द वेस्ट : न्यू डिसकवरीज
- द लाइफ ऑफ विवेकानन्द एण्ड द यूनिवर्सल गोस्पेल, रोम रोनाल्ड
- स्वामी विवेकानन्द इन इंडिया राजगोपाल चट्टोपाध्याय
- लेक्चर्स फ्रम कोलंबो अलमोरा , अद्वैत आश्रम
- स्वामी विवेकानन्द ऑन इंडिया एण्ड हर प्रोबल्मस
- थॉट ऑन वेदान्त – स्वामी विवेकानन्द
- दस स्पेक स्वामी विवेकानन्द, अद्वैत आश्रम
- सब के स्वामी जी, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर
- राष्ट्र जागरण के अग्रदूत स्वामी विवेकानन्द, नंद वल्लभ, विवेकानन्द विद्यापीठ
- विश्वबंध स्वामी विवेकानन्द, डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, रामकृष्ण आश्रम
- द अद्वैत आफ स्वामी विवेकानन्द : अ फिलोस्फिकल अप्रेसल, थॉमस मान्युमन
- वैदिक मैनेजमेंटः द धार्मिक एण्ड योगिक वे, कृष्ण सैगल ज्ञान प्रकाशन
- वेदान्त एण्ड मैनेजमेंट, नलिनी बी डेव , दीप एण्ड दीप प्रकाशन
- माइटी मैनेजमेंट माइंड ऑफ इंडिया, नवीन माथुर, यूनिवर्सिटी बुक हाउस
- इंडियन इथोस एण्ड वेल्यूस फॉर मैनेजरस, डॉ. एन.एम. खण्डेलवाल
- इंडियान इथोस एण्ड वेल्यूस फॉर मैनेजर्स (टेक्सट एण्ड केसेस फ्रम महाभारत) डॉ. एन.एम.खण्डेलवाल
- मैनेजमेंट कान्सेप्ट्स फ्रम महाभारत – डॉ. एन.एम. खण्डेलवाल
- मैनेजमेंट लेसन्स फ्रम रामचरित मानस, डॉ. एन.एम.खण्डेलवाल
- स्पिरिच्युल कल्चर फॉर मॉडर्न मैनेजमेंट एण्ड लीडरशिप, स्वामी जितात्मानन्द, रामकृष्ण मिशन
- काउन्ट योर चिकन्स बिफोर दे हैच, अरिन्दम चोधरी
- महात्मा गांधी एण्ड जवाहर लाल नेहरू, द टू स्टालवार्ट्स हू शेप्ड इंडिया, के बालन
- भगवदगीता एण्ड मैनेजमेंट, एम.पी. भट्टाथीरि
- स्पिरिचयुअल प्रेक्टिस इन एवरीडे मैनेजेरियल लिविंग, अभिनव आर्य
- फिलोसोफिकल फाउण्डेशन ऑफ मॉर्डन मैनेजमेंट, एस.के. चक्रवर्ती, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- अबाउट मैनेजमेंट एण्ड लीडरशिप, लेसन्स फ्रम मिलिट्री, सुसान हैथफील्ड, टाटा मैक्ग्राहिल्स
- मैनेजरियल इफक्टिवनेस एण्ड क्वालिटी ऑफ वर्कलाइफ, इंडियन इनसाइट, एस.के.चक्रवर्ती, टाटा मेक्ग्राहिल्स
वेल्यू ऑरियटेंशन इन द वर्ल्ड ऑफ इंडियन मैनेजर्स/ एडमिनिस्ट्रेटर्स विवेकानन्द निधि , कोलकाता.